का प्रसिद्ध स्थान है। इस मन्दिर के उतर में एक विशाल कुण्ड है जो मंदाकिनी कुंड के नाम से पुकारा जाता है। इस मन्दिर के पास ही पत्थर के तीन विशाल पहाड़ दिखाई देते हैं। इस तीर्थ पर कुल ६ देरासर हैं। यहां का प्रमुख मन्दिर श्री आदिनाथ प्रभु का दो मंजिला भव्य मन्दिर है। उपर वाली मन्जिल में श्री पार्श्वनाथ जी की चौमुखी प्रतिमा विराजमान है।

अचलगढ़ की तलहट्टी में प्रभु शान्तिनाथ का प्राचीन भव्य मन्दिर है। यहां दो धर्मशालाएं हैं। मन्दिर में पुस्तकालय, भोजनालय की उचित व्यवस्था है। यहां की प्रतिमा धर्म के प्रति श्रृद्धा उत्पन्न करती है।

अचलगढ़ व देलवाडा के मन्दिर जैन धर्म, संस्कृति की अपनी पहचान संसार के सामने प्रस्तुत करते हैं। मेरा परम सौभाग्य है कि इस लम्बी धर्म यात्रा में मुझे इन मन्दिरों में पूजा अर्चना का सौभाग्य मिला। इन तीर्थों के दर्शन से मेरी जैन धर्म के प्रति आस्था को नया वल मिला। मुझे जैन इतिहास के वारे में नई जानकारीयां प्राप्त हुई। इस कला के वेजोड नमूने देख कर उन शिल्पीयों के चरणों में शीश स्वयं ही झुक जाता है, जिनके कुशल निर्देशन में यह भव्य तीर्थ का निर्माण हुआ। विमलशाह व उनके वंशज, वस्तुपाल व तेजपाल जैसे श्रावकों के वारे में इतिहासक जानकारी मिली।

प्रकरण - १६

मेरी संक्षिप्त यात्राएं

मैंने जहां जीवन में लम्बी-लम्बी तीर्थ यात्राएं देव गुरू व धर्म की कृपा से सम्पन्न की हैं उसी तरह मैंने छोटी छोटी तीर्थ यात्राएं संक्षिप्त रूप से सपरिवार सम्पन्न की है। इन यात्राओं में हिन्दु तीर्थों की यात्रा भी है, कांगडा तीर्थ के मूलनायक भगवान ऋषभदेव की यात्रा की है। इसी जैन तीर्थ यात्रा की कडी में मैं इस यात्रा में इन स्थानों की यात्रा का वर्णन करना चाहूंगा। इस यात्रा ने मेरी धर्म श्रद्धा को नया बल प्रदान किया है। यह सभी तीर्थ उतर प्रदेश में पडते हैं। मैंने इन तीर्थों में सर्व प्रथम श्री पुरिमिताल की यात्रा की। यह तीर्थ प्रयाग राज के नाम से भी पुकारा जाता है।

प्रयाग दर्शन :

प्रयाग का प्राचीन नाम जैन ग्रंथों में पुरिमिताल है। कभी यह नगर भी प्रभु ऋषभदेव की अयोध्या नगरी का एक वन था। यह क्षेत्र त्रिवेणी संगम के नाम से प्रसिद्ध है। यह इलाहाबाद जिले में पड़ता है। यहां श्वेताम्बर व दिगम्बर दोनों जैन मन्दिर हैं। श्वेताम्बर जैन मन्दिर में मूलनायक भगवान ऋषभदेव हैं। पर दिगम्बर मन्दिर में मूलनायक भगवान ऋषभदेव के साथ साथ पार्श्वनाथ की अतिशय पूर्ण प्रतिमा विराजमान है। हिन्दुओं का त्रिवेणी संगम होने के कारण इस तीर्थ पर जन समूह उमड़ा रहता है। यहां गंगा, यमुना व सरस्वती का संगम होता है। यहां एक वट वृक्ष के नीचे प्रभु ऋषभदेव की चरण पादुका है। माना जाता है कि प्रभु ऋषभदेव को यहां केवल्य ज्ञान हुआ था। प्रभु का चतुर्थ कल्याणक यहां हुआ था। प्रभु ऋषभदेव जी दीक्षा कल्याण

भूमि पर मन्दिर में विराजित प्रतिमाएं यहां अंग्रेज शासकों ने दिगम्बर समाज को दी थीं, जो छोटे व बड़े दिगम्बर मन्दिर में विराजित हैं। दोनों मन्दिरों में कलात्मक प्राचीन प्रतिमाओं के दर्शन होते हैं। दोनो समाज की धर्मशाला है। श्वेताम्बर धर्मशाला में भोजन की व्यवस्था है। दिगम्बर धर्मशाला आधुनिक सुविधा युक्त है।

मैंने प्रयाग तीर्थ की यात्रा की। हिन्दु व जैन दोनों परम्पराओं के प्रसिद्ध मन्दिर की यात्रा की। प्रभु ऋषभदेव की केवल्यज्ञान कल्याणक भूमि देखी। विशेष रूप से वटवृक्ष जो प्रभु ऋषभदेव की याद दिलाता है, उसके दर्शन किए।

श्री रत्न पूरी तीर्थ :

यह तीर्थ फैजाबाद, वाराणसी मार्ग पर गांव में स्थित है। अयोध्या से २५ किलोमीटर दूर है। यह तीर्थ बहुत प्राचीन है। तीर्थ पर धर्मनाथ जी के च्यवन, जन्म, दीक्षा व केवल्यज्ञान कल्याणक इसी भूमि पर हुए। यह एक दिगम्बर मन्दिर है। जहां प्रभु धर्मनाथ की मूलनायक के रूप में पूजा होती है।

रत्नपूरी से मैं सपरिवार वाराणसी गया। मैंने सभी वन्दनीय स्थलों को पुनः अपने परिवार सहित देखा, जिनकी मैंने अपने धर्मभ्राता रविन्द्र जैन से यात्रा की थी। वाराणसी, काशी, मुगलसराय एक ही स्टेशन के नाम हैं। काशी कला, धर्म, संस्कृति का केन्द्र है। उत्तर प्रदेश का जैन धर्म में प्रमुख स्थान है। यह क्षेत्र अनेकों तीर्थंकरों की जन्मभूमि है। इसी क्रम में मेरा अगला स्थल अयोध्या था।

यह एक इतफाक था कि मुझे पुनः वाराणसी और इस के आस पास यात्रा का सौभाग्य मिल रहा था।

वाराणसी काशी विश्वनाथ के मन्दिर के कारण जगत प्रसिद्ध है। इस की यात्रा जहां भारतीय संस्कृति के खुले दर्शन करवाती है वहीं विभिन्न भाषा के लोगों से मिलाप कराती है। वहां यह नगर जैन, बौद्ध व हिन्दु इतिहास की लाखों गाथाएं लिए हुए है।

वाराणसी का वर्णन मैंने पहले भी किया था। यह स्वयं तीर्थंकर पधारे हैं। तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ, तीर्थंकर पार्श्वनाथ, तीर्थंकर श्रेयासनाथ, तीर्थंकर चन्द्रप्रभु के ४ कल्याणक इस स्थान पर हुए। स्वयं श्रमण भगवान महावीर यहां पधारे और लोगों को मुक्ति का मार्ग बताया।

अब मैंने अगला स्थान देखने का मन बनाया। वह तीर्थ था अयोध्या नगरी। जैन इतिहास के अनुसार प्रभु ऋषभदेव ने स्वयं इस नगरी का निर्माण किया था। उस जमाने में इस नगरी का नाम विनिता रखा गया।

अयोध्या तीर्थ की यात्रा

अयोध्या नगरी भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह नगरी सरयु नदी के किनारे स्थित है। यहां जैन धर्म के चार तीर्थंकरों भगवान ऋषभदेव, भगवान अर्जीतनाथ, भगवान सूमितनाथा व भगवान अनंतनाथ के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवल्य कल्याणक सम्पन्न हुए थे। यह तीर्थ भगवान राम की जन्म भूमि के कारण जगत प्रसिद्ध है। रामायण की अधिकांश घटनाओं का इस नगर से संबंध रहा है। इस नगर ने बहुत उतार चढाव देखे हैं। यहां हिन्दु मन्दिर काफी मात्रा में हैं। यह स्थान रत्नपूरी से २८ किलोमीटर की दूरी पर है। यह श्वेताम्बर व दिगम्बर दोनों मन्दिर हैं। श्वेताम्बर मन्दिर कटरा में स्थित है। जहां मूलनायक भगवान अर्जातनाथ की भव्य प्रतिमा है। दिगम्बर

मन्दिर रायगंज में स्थित है जहां मूलनायक भगवान ऋषभदेव हैं।

कहा जाता है कि बाबर के सेनापति मीर बाकी ने यहां राम जन्म भूमि पर एक मस्जिद बनाई थी। जिसे १९९२ में गिरा दिया गया। यहां मन्दिर बनाने का कार्य जल रहा है। पर अदालती झगडे के कारण अभी राम लला की मूर्ति एक स्थान पर स्थापित है। यहां बहुत साधूओं के अखाड़े हैं। यहां के प्रसिद्ध मन्दिरों में हनुमान गढ़ी, तुलसी दास मन्दिर, कनक भवन व सीता रसोई दर्शनीय स्थल हैं। सरयू नदी पर तीर्थंकरों की ५ टोंके हैं।

इस नगर में धर्मशालाएं व होटल कदम कदम पर मिलते हैं। यात्रीयों का हमेशा आवागमन बना रहता है। यहां हिन्दू धर्म के अतिरिक्त कुछ मुस्लिम मस्जिदें देखने योग्य हैं।

प्रसिद्ध दर्शनीय स्थल

यहां दिगम्बर जैन समाज ने काफी निर्माण कार्य करवाया है। रायगंज में भव्य ऋषभदेव की प्रतिमा है। प्राचीन दिगम्बर मन्दिर में भगवान सुमतिनाथ के चरण विराजमान हैं। एक सरकारी बाग भगवान ऋषभदेव को समर्पित है।

प्रभु अनंतनाथ के जन्म स्थान पर टोंक है। यह मुहल्ला राजघाट में है। यह १९ तीर्थंकरों के चरण भी विराजित हैं। असफी भवन चोराहा में प्रभु अभिनंदन के जन्म स्थान पर टोंक (चरण चिन्ह) हैं, जिनकी जनसाधारण पूजा अर्चना करता है। यह भरत बाहुबलि टोंक में चरण चिन्ह हैं।

भगवान अजीतनाथ के जन्म स्थान पर भी उनका चरण चिन्ह पूजा जाता है। यह टोंक मुहल्ला बकरसरिया

टोला तुलसी नगर में स्थित है। पुराना थाना मुहल्ला स्वर्गधाम में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के चरण चिन्ह विराजमान हैं।

मुहल्ला रामकोट में प्रभु श्री राम की जन्मभूमि है, यहां पर हनुमानगढ़ी, कनक भवन प्रसिद्ध हैं। श्री वालमिकी रामायण भवन एवं चार धाम मन्दिर छोटी छावनी अयोध्या मुहल्ला वासुदेव घाट में स्थापित हैं। इस तीर्थ पर हिन्दू व जैन धर्म को मानने वाले काफी संख्या में हाजिर होते हैं।

काफी लम्बे समय से अयोध्या नगरी देखने की इच्छा थी। पर कोई जाने का प्रोग्राम नहीं बन रहा था। एक बार मैं लखनउ अपने परिवार समेत अपनी बहिन उर्मिल को मिलने गया था। तभी यहां आने का कार्यक्रम बना। मैं सारे परिवार सहित अयोध्या पहुंचा। वहां अपनी गाडी में मैंने यह यात्रा सम्पन्न की। अयोध्या भारत का पवित्र नगर है। जहां इक्ष्वाकु कुल संस्थापक भगवान ऋषभदेव पैदा हुए। इस का नाम उन्होंने विनिता रखा। यह मानव सभ्यता का प्रथम नगर था। यहां से प्रभु ऋषभदेव के १०० पुत्र पुत्रीयां हुई। भरत चक्रवर्ती के नाम से भारत वर्ष पड़ा। ब्राह्मी सुन्दरी व वाहुवलि जैसे महापुरूषों का यह नगर था।

यहां प्रभु ऋषभदेव ने पुरूषों को ७२ कलाएं व स्त्रीयों को ६४ कलाएं सिखाई। यह प्रथम चक्रवर्ती भरत यहां पैदा हुआ। यहीं प्रभु महावीर का पूर्व जन्म मरिचि के रूप में हुआ। मरिची भरत का पुत्र था। प्रभु ऋषभदेव का पौत्र था। एक बार समोसरण लगा हुआ था। भरत ने प्रश्न किया "प्रभु ! आप की सभा में कोई ऐसा जीव है जो तीर्थंकर रूप में जन्मेगा ?" प्रभु ऋषभदेव ने कहा "तुम्हारा पोत्र मरिची चक्रवर्ती, वासुदेव तीर्थंकर के रूप में पैदा होगा।

यह अंतिम वर्धमान तीर्थंकर होगा।''

अपने भविष्य को सुन मारिची को अहं पैदा हो गया। इसी अहंम के कारण उसे तीर्थंकर परम्पराओं के विपरी कुल में जन्म लेना पड़ा। यह स्थान तीर्थंकर परम्परा के वर्णन से भरा पड़ा है। मैंने सभी जैन मन्दिरों में पूजा अर्चना की।

फिर राम मन्दिर हुनमानगढ़ी के दर्शन किए। फिर सयु नदी के पावन तट पर स्नान कर वापस गोविन्दगढ़ आ गया।

प्रकरण – १७

तेरापंथी स्थलों की यात्रा

मेरी डूंगरगढ़ यात्रा :

मैंने पहले भी लिखा है कि मेरे जीवन में तीन मुनियों का उपकार है। वह थे स्व० श्री रावत मुनि जी, स्व० श्री वर्धमान मुनि जी व श्री जय चन्द जी महाराज। श्री वर्धमान जी, जब अंतिम बार पंजाब पधारे तो वह श्री कमल मुनि जी के साथ थे। उनके दर्शन मैंने मालेरकोटला, पटियाला, नाभा, समाना में किए थे। उस के बाद वह आचार्य श्री तुलसी जी के चरणों में हाजिर हुए। आचार्य भगवान ने उनका चतुर्मास डूंगरपुर में करने का आदेश दिया।

मुनि वर्धमान का जन्म गुजरात के वाव शहर में हुआ था। जब आचार्य श्री तुलसी गुजरात में पधारे तब युवा वर्धमान के मन में संयम लेने का विचार उठा। घर वाले उन्हें छोड़ने को तैयार न थे। घर से सम्पन्न धार्मिक संस्कारों के वर्धमान देव, गुरू व धर्म के प्रति समर्पित थे। घर वालों ने उन्हें बन्धन में डालने के लिए उनकी सगाई कर दी। पर यह सगाई का बन्धन भी उन्हें संसार में बांध न पाया। आप ने आचार्य श्री तुलसी जी से दीक्षा ग्रहण की।

१९६७ में मेरी व मेरे परिवार को इनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह दिन मेरे जीवन का इतिहासक दिन था। जब मुझे अणुव्रत दीक्षा प्रदान की गई तब से वर्धमान मुनि हमारे लिए मुनि ही नहीं थे, वह हमारे परिवार के सलाहकार बन गए, मुझे कदम कदम पर उन्होंने प्रेरणा दी। पर विधि को कुछ और ही मंजूर था। मुनि श्री

वर्धमान डूंगरगढ़ जा रहे थे। उन दिनों भयंकर गर्मी पड़ रही थी। गर्मी का भीषण प्रकोप राजस्थान में कुछ ज्यादा होता है। फिर जैन मुनि नंगे पांव व नंगे सिर भ्रमण करते हैं। वैसे भी मुनि श्री वर्धमान महान तपस्वी थे। उन्होंने गर्म कपड़े ओढने का त्याग कर रखा था। अल्प परिग्रह ही उनका जीवन था। उनकी कहनी कथनी एक थी।

डूंगरगढ़ मुनि पहुंचे तो भयंकर गर्मी के प्रकोप से बेहोश हो गए। इस धरती पर उन्होंने अंतिम श्वास ली। मुझे उनके देवलोक गमन का पता तीन दिन बाद लगा। मुझे भयंकर आघात पहुंचा। इसी आघात को लेकर मैं डूंगरगढ़ सपरिवार पहुंचा। उनके साथी मुनि राज से बात की। उस धरती को प्रणाम किया। यह श्रद्धा व आस्था से भरी यात्रा, एक स्वर्गवासी आत्मा को समर्पित थी। जिन्होंने मेरे जीवन निर्माण में प्रमुख हिस्सा डाला है। जिनका आशीर्वाद मुझे ने मेरे हर कार्य में सहयोगी रहा है। पर उनका लम्बे समय के बाद पंजाब आगमन अंतिम आगमन था। उनका मन पंजाब छोड़ने को नहीं था। पर तेरापंथ संघ व्यवस्था में यात्रा का निर्णय आचार्य करता है। उसी आज्ञा को शिरोधार्य करके मुनि वर्धमान जी ने डूंगरगढ़ की यात्रा की थी, जो उनकी अंतिम यात्रा सिद्ध हुई।

डूंगरगढ़ से मेरे मन मे उनके पुराने साथी मुनि श्री जय चन्द्र जी महाराज के दर्शन का कार्यक्रम बना। श्री जय चन्द्र जी महाराज तेरापंथ धर्म संघ के प्रमुख संत हैं। मेरी अहमदाबाद यात्रा का कारण भी आप थे। अब इस यात्रा को किए लम्बा समय बीत चुका था। वैसे भी आप व्योवृद्ध तपस्वी व महान धर्म प्रचारक संत हैं। आप उदयपूर के नजदीक एक गांव अंकोला में विराजमान थे।

मैंने डूंगरपूर से लाडनुं की ओर प्रस्थान किया।

जिस का वर्णन मैंने लाडनुं यात्रा में कर दिया है। मुझे अंकोला जाने के लिए उदयपूर जाना पड़ा। उदयपूर भारत का पैरिस है। इसे झीलों का नगर भी कहा जाता है। झील, महलों की प्रसिद्धि के कारण उदयपूर पर्यटन स्थल है। उदयपूर कोई जैन तीर्थ नहीं। पर स्थानक वासी श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि की यह जन्म, दीक्षा व आचार्य पद स्थली है। यह शास्त्री सर्कल में श्री तारक जैन ग्रंथालय में आचार्य श्री के सभी प्रकाशन उपलब्ध होते हैं। आचार्य श्री व उनके पूर्व आचार्य का यह प्रचार स्थल है। उदयपूर में मैं एक रात्रि रूका। यहां झील जल महल दर्शनीय हैं।

फिर अगले मुनि श्री जय चन्द्र जी महाराज के दर्शन करने के लिए अंकोला पहुंचा। भव्य गांव में मुनि श्री के दर्शन वन्दना का लाभ मिला। उनके साथ मुनि श्री वध मान से जुड़ी स्मृतियों को सांझा किया। अब मुझे जैन धर्म की शिक्षा देने वाले आप ही हैं। कुछ मन की सान्तवना मिली। गुरूदेव ने परिजनों का हाल पूछा।

एक रात्रि अंकोला ठहरे। फिर मूझे बताया गया कि पास ही ऋषभदेव केशरीया जी तीर्थ है। मैंने अंकोला से चल कर इस तीर्थ की ओर प्रस्थान किया।

श्री केशरीया जी :

यह तीर्थ उदयपूर से ६६ किलोमीटर की दूरी पर है। यह मूल नायक आदिश्वर भगवान हैं। जिसे स्थानीय भील काला बाबा कहते हैं। इस मन्दिर को जैन व हिन्दू दोनों मानते हैं। मेवाड के राणा यहां हमेशा आते रहते थे। राणा फतिहसिंह जी ने प्रभु के लिए रत्नों जडित आंगी भेंट की थी। यहां प्रचूर मात्रा में केशर चढाया जाता है। इस लिए इस

प्रतिमा का नाम केशरीया जी पड गया। वैसे इस स्थान का ऋषभदेव है। जो राष्ट्रीय मार्ग से ८ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह मन्दिर ५२ जिनालय युक्त है। यह मन्दिर बहुत प्राचीन है। इस मन्दिर के कई जीर्णोद्धार श्वेताम्बर व दिगम्बर आचार्य ने करवाए। किंवदंती है कि इस स्थान की पूजा लंकापति रावण ने भी की थी। यह मन्दिर आपसी कलह के कारण राजस्थान सरकार के आधीन है। जिस का प्रबंध देवस्थान विभाग करता है। मुझे इस यात्रा में श्रृद्धा व आस्था के विभिन्न दर्शन हुए।

अन्य यात्राएं

यह यात्रा का मुख्य उदेश्य तेरापंथ संघ के गुरूदेव के दर्शन करना था। पर रास्ते में जो भी जैन तीर्थ आए उनका विवेचन भी जरूरी है। इस संदर्भ में मैं सर्वप्रथम आचार्य श्री तुलसी जी की जन्म भूमि लाडनू गया। लाडनूं राजस्थान का प्राचीन स्थान है। यह ऐसा गांव है जिसे तेरापंथ धर्म संघ का गढ़ कहा जा सकता है। लाडनूं गाव ने तेरापंथ सम्प्रदाय के अनेकों साधु साध्वीयों को जन्म दिया हे। बीसवीं सदी के अंत में इस करबे को नई पहचान मिली, जब आचार्य श्री तुलसी जी भगवान महावीर के २५०० निर्वाण महोत्सव पर जैन धर्म की एक मात्र यूनिवर्सिटी जैन विश्व भारती का निर्माण इस गांव में किया। इस गांव को नई पहचान मिली। यह यूनिवर्सिटी ग्रांट कमिशन से मंजूर है। यहां जैन धर्म, प्रेक्षा ध्यान जीवन विज्ञान पढ़ाने की उच्च व्यवस्था है। संसार भर के विद्वान जैन धर्म के उच्च अध्ययन के लिए आते हैं। यहां शोध केन्द्र, प्रकाशन केन्द्र, साधु साध्वीयों के निवास स्थल, ध्यान केन्द्र, प्रवचन केन्द्र, पुस्तकालय के भवन हैं। विद्वानों के रहने के लिए गेस्ट हाउस हैं। बाहर

से आने वाले दर्शनार्थीयों के लिए हर राज्य का अपना भवन है। जहां उसी राज्य के लोगों के ठहरने की व्यवस्था है।

लाडनुं सुजानगढ़ से ११ किलोमीटर की दूरी पर है। जयपूर-सीकर से ११५ किलोमीटर दूर राजमार्ग पर स्थित है।

लाडनूं में प्राचीन वडा मन्दिर अपनी वास्तुकला एवं भव्यता के कारण दर्शनीय है। लाडनूं में आचार्य तुलसी के निर्देशन में आगम वाचना का काम सम्पन्न हो चुका है। नगर परकोटे के वाहर सुखसदन, सम्पूर्ण संगमरमर का निर्मित विशाल जिनालय है। रात्रि में कृत्रिम प्रकाश का विशेष आयोजन दर्शनीय है। लाडनूं जंगम तीर्थ है। यह साधू, साध्वीयों के अतिरिक्त परमार्थीक संस्था की वहिनों की पढ़ाई का अच्छा प्रवन्ध है। आचार्य तुलसी ने तेरापंथ संघ को हर मामले में नई दिशा प्रदान की।

लाडनूं में मैने अपने आचार्य तुलसी जी के दर्शन किए। एक वात मैं और अर्ज कर दूं, जव मैं आचार्य श्री से अंतिम वार मिला तो आचार्य श्री अपना आचार्य पद त्याग चुके थे। यह पद उन्होंने अपने विद्वान शिष्य आचार्य महाप्रज्ञ को दे दिया था। जव वह गणपति कहलाते थे। आचार्य तुलसी का सारा जीवन क्रान्तिकारी था। उन्होंने स्वयं ही इस पद का तयाग किया जव कि सारा संसार पदों के पीछे भागता है। यह विडम्वना है कि सारे संसार के लोग पदों के लिए लडते हैं पर आचार्य तुलसी ने लम्वे समय तक तेरापंथ को संसार में अणुव्रत, प्रेक्षा ध्यान व जीवन विज्ञान के माध्यम से नई पहचान देकर नए आयाम प्रदान किए।

जव मैं वहां पहुंचा तो गुरूदेव अपने कमरे में विराजमान थे। उन्होंने मेरे साथ ढेरों वातें की। पंजाव में तेरापंथ समाज की स्थित, अणुव्रत, जैन एकता व पंजावी

जैन साहित्य के संदर्भ में उन्होंने अनेकों दिशा निर्देश दिए। शायद मेरी गुरुदेव से अंतिम भेंट थी। उस के कुछ मास बाद ही उन का देव लोक हो गया। यह स्थान उनकी अमर स्मृति है। उन्होंने जैन धर्म में अनेकों जन उपयोगी प्रयोग किए। वह प्रभावक आचार्य थे। मुझे प्रसन्नता है कि वह मुझे सम्यक्त्व प्रदान करने वाली चारित्रात्मा थे। जैन समाज ही नहीं, समस्त मानवता उनके आचार्य पद त्याग से हैरान थी। सारा कार्यक्रम टी.वी. के माध्यम से दिखाया गया। भारत के चुनाव आयोग के प्रधान श्री टी.एन. शेषण उस समारोह में उपस्थित थे। उन्होंने कहा "संसार के इतिहास में आचार्य तुलसी का नाम स्वर्णीम अक्षरों में दर्ज हो गया है। संसार के लोग पदों के लिए लड़ते हैं पर यह दिव्य पुरुष स्वेक्षा से त्याग रहा है। आचार्य तुलसी व उनके शिष्य परिवार के मेरे व सारे परिवार पर बहुत उपकार हैं, जिन्हें भुलाना असंभव है।

सिरियारी तीर्थ :

जैन श्वेताम्बर परम्परा में तेरापंथ संघ का विशेष स्थान है। इस धर्म संघ व उनकी आचार्य परम्परा का मैंने वर्णन पहले कर दिया है। तेरापंथ के प्रथम आचार्य श्री भिक्षु जी थे जो सर्व प्रथम स्थानक वासी आचार्य श्री रघुनाथ जी के शिष्य बने। फिर विचार भेद के कारण उन्होंने १३ श्रमणों को लेकर एक संघ का निर्माण किया। इस संघ में नई व्यवस्था को जन्म दिया। सभी साधू, साध्वीयां, श्राविक, श्राविकाएं एवं आचार्य की आज्ञा में रहने की मर्यादा उन्होंने डाली। उनका जीवन क्रान्तिकारी था। उन्होंने राजस्थानी भाषा में प्रभु महावीर के उपदेश जन समूह में फैलाए। उनके जीवन काल में उनका संघ फला फूला।

आपने जीवन की अंतिम संध्या में आप सिरियारी पधारे। सिरियारी के लोगों को जैन धर्म व प्रभु महावीर का उपदेश सरल भाषा में सुनाया। इसी स्थल पर आप का देवलोक हुआ। इस स्थान पर मुझे आप सबसे पहले आचार्य की समाधि के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। आचार्य श्री का यह समाधि स्थल समस्त श्री श्वेताम्बर तेरापंथ जैन समाज के लिए इतिहासक तीर्थ है। यह स्थान प्रेरणादायक है। यहां आने वाले को देव, गुरू व धर्म के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा मिलती है। तेरापंथी समाज का यह आस्था का केन्द्र ही नहीं तीर्थ स्थान है। यहां आते ही आचार्य श्री भिक्षु स्वामी जी महाराज सारा जीवन आंखों के सामने उमड आता है। यहां आकर हमें आचार्य भिक्षु का अनुशाषण व संयम का संदेश ध्यान में आता है। आचार्य श्री की विचारक क्रान्ति, आधुनिक तेरापंथ समाज को नया मार्ग प्रदान करती है। आचार्य भिक्षु ने सचमुच जैन धर्म को नया आयाम प्रदान किया है। इस समाधि में कांच के माध्यम से उनके जीवन की घटनाओं को संजीव किया गया है।

मैंने इन अध्ययनों में अपनी उन यात्राओं का वर्णन किया है जो मेरे सम्यक्त्व की यात्रा में सहायक बने। हर तीर्थ का अपना इतिहास है, परम्परा है, पर सारे तीर्थ हमें तीर्थंकरों के जीवन व संदेश की याद दिलाते हैं। हर तीर्थ ने मुझे जैन धर्म व परम्परा के प्रति आस्था व श्रृद्धा को जन्म दिया। यह तीर्थ मेरे जीवन में कुछ करने की प्रेरणा देते रहे हैं। मैंने अपनी इन यात्राओं से जैन संस्कृति के दर्शन किए हैं। यह सभी तीर्थ अपने अपने आप इतिहास की कड़ीयां जोडने का कार्य करते हैं।

प्रकरण - १८

२१वीं सदी की महान आत्मा से भेंट

मैंने पिछले सभी प्रकरणों में कुछ ऐसी घटित घटनाओं का वर्णन किया है जो मेरे जीवन में श्रद्धा का कारण बनी। सम्यक् ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चारित्र द्वारा धर्म के तत्व को जानने का सुअवसर मिला। जो साधु, साध्वी, आचार्य, उपाध्याय व तीर्थो ने मेरे मन में तीर्थंकरो की परम्परा को जानने में, मेरी सहायता की, मैं उन सब का अंतःकरण से आभार करना चाहता हूं। ऐसे व्यक्तियों के एक नाम अगर उभरता है वह है श्रमण संघ के वर्तमान आचार्य डा० शिवमुनि जी महाराज।

मेरा उन से प्रथम परिचय तब हुआ, जब वह साधु बनने के पश्चात मालेरकोटला अपने गुरू श्रमणसंघ के सलाहकार श्री ज्ञान मुनि जी महाराज के साथ आए थे। श्री ज्ञान मुनि जी आचार्य श्री आत्मा राम जी के विद्वान शिष्य थे। उनका काम उनके गुणों के अनुरूप है। हमारी संस्था ने उन्हें राष्ट्रसंत पद से विभूषित किया था।

आचार्य डा० श्री शिव मुनि जी महाराज का जन्म १८ सितम्बर १९४२ को आज से ५९ वर्ष पूर्व मलोट जिला फरीदकोट निवासी सेठ चिरंजीलाल व माता विद्या देवी के यहां हुआ था। घर से आप सम्पन्न परिवार से थे। आप को बचपन से ही अध्ययन के प्रति लगाव था। जब ज्ञान मुनि जी मोगा में थे आप दसवीं कक्षा में पढ़ते थे। आप को वैराग्य लग चुका था। पर गुरूदेव ने आदेश दिया "अभी पढ़ों, फिर साधु बनना। आप ने घर में रहकर डबल एम. ए. कर लिया। फिर भी घर वालों से आज्ञा न मिली। लम्बे संघर्ष के बाद ३ बहिनों के साथ आप साधु बने।

आप का चतुर्मास मालेरकोटला में था। एक दिन आप स्वध्याय कर रहे थे। आप ने कहा "भैय्या ! साधु तो वन गए। अव करें क्या ? समझ नहीं आता।"

मेरे धर्म भ्राता रविन्द्र जैन ने कहा "आप जैन धर्म पर पी.एच.डी. कर लीजिए।"

मुनि जी को सुझाव पसंद आ गया। पर युनिवर्सिटी के नियम सख्त थे। जो साधु परम्परा के विपरीत थे। वाईस चांसलर से मिल कर जैन साधु के लिए नियमों में परिवर्तन कराया गया। इस कार्य में प्रसिद्ध वोद्ध विद्वान डा एल.एम. जोशी ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया। उन्होने यूनिवर्सिटी के नियम ही नहीं वदलवाए, वल्कि उनके निर्देशक वन उन्हें पी. एच.डी. करवाने लगे। यह कार्य ३ वर्ष चला। डा० शिव मुनि पी.एच.डी. करने वाले प्रथम जैन मुनि हैं। इस कारण उनकी संघ में प्रतिष्ठा वढ़ी। फिर पूना सम्मेलन के अवसर पर आचार्य श्री आनंद ऋषि जी महाराज ने आप को आचार्य घोषित कर दिया। आचार्य श्री आनंद जी के स्वर्गवास के वाद आचार्य श्री देवेन्द्र मुनि जी महाराज ने इस पाट को सुशोभित किया । उनके देवलोक के पश्चात अव आप इस गरिमापूर्ण पद पर विराजमान हैं।

जव सचित्र महावीर जीवन चारित्र प्रकाशित हुआ तो साध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की तवीयत अच्छी नहीं चल रही थी। पर सवसे पहली प्रति उन्हें विधिवत् समर्पित की गई। फिर हम देहली में एक समारोह के सिलसिले में पहुंचे थे। वहीं २५ वर्ष पश्चात् आचार्य श्री शिव मुनि जी महाराज के दर्शन किए थे। मिलते ही आपने पहचान लिया। २५ वर्ष का समय काफी लम्वा था। फिर आप को मोन ध्यान का समय था, जव मैंने एक पर्ची पर दोनों के नाम लिख कर भेजे तो आप सिंहासन छोड़ कर

बाहर आ गए। १५ मिन्ट बातें की। आप को सचित्र भगवान महावीर की प्रतिभेंट की गई। समय कम थ। आप ने चतुर्मास में आने को कहा। इधर महासाध्वी श्री स्वर्णकांता जी महाराज की सेवा में रहने के कारण दर्शन नहीं हो सके। पर छोटी सी मुलाकात ने मुझे आभास दिलाया कि शिव मुनि जी महाराज कितने विनित सरलात्मा हैं। आप के दर्शन से पिछले २५ वर्ष की स्मृतियां हृदय स्तर पर उभर आई। आचार्य श्री शिव मुनि जी अब महान योगी व जैन एकता के प्रतीक हैं। आप की कृपा से श्री जिनेन्द्र गुरुकुल पंचकुला की जमीन हरियाणा सरकार ने वापस की है। आप महान लेखक हैं। वह विभिन्न भाषा के जानकार हैं। ३६ गुणों के धारक आचार्य हैं। आप ने चतुर्मास में भव्य समारोह इस पुस्तक का विमोचन करवाया, जो २१वीं शताब्दी की उपलब्धी थी।

यह पुस्तक आस्था की गाथा है। आस्था के बिना जीवन अधूरा है। व्यक्ति किसी भी कार्य को करना चाहे, तो आस्था चाहिए। व्यक्ति किसी भी कार्य को करना चाहे, तो आस्था के बराबर है। जहां आस्था नहीं वहां कुछ भी नहीं। इसी आस्था के वश इसी वर्ष में श्री महावीर जी की यात्रा सपरिवार की। जैन धर्म में आस्था को सम्यक् दर्शन कहा गया है। आस्था कोरा ज्ञान हीं, यह तो भक्ति है, समर्पण है। आस्था से किया कोई भी कार्य अछूता नहीं रहता। हमें हर समय आस्था रख कर हर कार्य करना चाहिए। यह मैंने अपने जीवन की यात्रा का सार निकाला है। मेरा जीवन आस्था का सफर है। इस जीवन में अनास्था का कोई स्थान नहीं है। यह सफर तीर्थंकर परम्परा को समर्पित है।